अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय - ''लक्ष्मीनारायण मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''। **1 - 15**

1.1 व्यक्तित्व
1.1.1 जन्म
1.1.2 माता-पिता
1.1.3 बचपन-शिक्षा
1.1.4 साहित्य के प्रति अनुराग
1.1.5 नौकरी
1.1.6 वैवाहिक जीवन
1.1.7 भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था
1.2 कृतित्व
1.2.1 मिश्रजी के नाट्य साहित्य का परिचय
1.2.2 समस्या नाटक
1.2.3 ऐतिहासिक नाटक
1.2.4 पौराणिक नाटक
1.2.5 जीवनी नाटक
1.3 निष्कर्ष
संदर्भ सूची

द्वितीय अध्याय - ''आलोच्य नाटकों के विषयवस्तु का अनुशीलन।'' **16-55**

2.1 नाटक का स्वरुप
2.2 कथावस्तु का स्वरुप
2.3 कथानक की विशेषताएँ
2.4 'सिन्दूर की होली' नाटक की कथावस्तु
2.5 'सिन्दूर की होली' नाटक की कथावस्तु का अनुशीलन
2.6 'संन्यासी' नाटक की कथावस्तु
2.7 'संन्यासी' नाटक की कथावस्तु का अनुशीलन
2.8 निष्कर्ष
संदर्भ सूची

पृष्ठ क्रमांक

तृतीय अध्याय - "आलोच्य नाटकों के प्रमुख पात्रों का अनुशीलन" **56 - 100**

3.1 'चरित्र' शब्द का अर्थ
3.2 नाटक में चरित्र-चित्रण का स्वरुप
3.3 मिश्रजी के नाटकों में चरित्र-चित्रण
3.4 'सिन्दूर की होली' के प्रमुख पात्र
3.4.1 मुरारीलाल का चरित्र-चित्रण
3.4.1.1 अर्थलोलुप आदमी
3.4.1.2 बुध्दिवादी व्यक्तित्व
3.4.1.3 दुष्कृत्य करनेवाला आदमी
3.4.1.4 प्रायश्चित करनेवाला आदमी
3.4.1.5 आत्मबल की कमी होनेवाला आदमी
3.4.1.6 रिश्वतखोर आदमी
3.4.1.7 अवसरवादी आदमी
3.4.1.8 कानून व्यवस्था को दोषी ठहरानेवाला आदमी
3.4.1.9 कामभावना से पीड़ित आदमी
3.4.1.10 अकेला निराश आदमी
3.4.2 मनोजशंकर का चरित्र-चित्रण
3.4.2.1 अस्थिर चित्रण
3.4.2.2 मानसिक रोगी
3.4.2.3 स्पष्टवक्ता
3.4.2.4 आधुनिक युग का प्रतिनिधी
3.4.2.5 निराशावादी चरित्र
3.4.2.6 मनोविज्ञान का ज्ञाता
3.4.2.7 अकर्मण्य और पलायनवादी
3.4.3 माहिरअली का चरित्र-चित्रण
3.4.3.1 स्पष्टवक्ता
3.4.3.2 इमानदार आदमी
3.4.3.3 व्यवहार कुशल आदमी
3.4.3.4 सद्‌गुणी
3.4.3.5 पश्चाताप की मूर्ति

पृष्ठ क्रमांक

3.4.4 मनोरमा का चरित्र-चित्रण
3.4.4.1 आदर्श भारतीय महिला
3.4.4.2 स्पष्टवक्ता तथा निर्भीक व्यक्तित्व
3.4.4.3 कला की उपासक
3.4.4.4 हृदय की दुर्बलता
3.4.4.5 परहित भावना से परिपूर्ण
3.4.5 चंद्रकला का चरित्र-चित्रण
3.4.5.1 स्वच्छंदवादी नारी
3.4.5.2 भारतीय नारी
3.4.5.3 भावूक नारी
3.4.5.4 स्त्री स्वतंत्रता की पक्षपातिनी
3.4.5.5 दृढीला स्वभाव
3.4.5.6 भावनाओं का उदात्तीकरण
3.4.5.7 क्रांतिकारी भावना
3.5 'संन्यासी' नाटक के प्रमुख पात्र
3.5.1 विश्वकान्त का चरित्र-चित्रण
3.5.1.1 नम्रशील
3.5.1.2 उदात्त और भावूक
3.5.1.3 अस्थिर चरित्र
3.5.1.4 असाधारण प्रतिभा तथा कार्यक्षमता
3.5.2 रमाशंकर
3.5.2.1 वासनामयी
3.5.2.2 नैतिकता का पतन
3.5.2.3 ईर्ष्यालु व्यक्तित्व
3.5.3 मुरलीधर का चरित्र-चित्रण
3.5.3.1 उदात्त विचारशील व्यक्ति
3.5.3.2 देशसेवा की भावना
3.5.3.3 त्यागी वृत्ती
3.5.3.4 दूरदर्शिता

पृष्ठ क्रमांक

3.5.4 किरणमयी
3.5.4.1 अहंभावी वृत्ती
3.5.4.2 स्पष्टवक्ता
3.5.4.3 विचारशील
3.5.4.4 नारी सुलभ भावना
3.6 निष्कर्ष
संदर्भ सूची

चतुर्थ अध्याय - ''आलोच्य नाटकों में चित्रित वातावरण का अनुशीलन'' **101-122**
4.1 प्रस्तावना
4.2 देशकाल वातावरण से तात्पर्य
4.3 देशकाल वातावरण का स्वरुप
4.3.1 मंचीय घटनाओं को वास्तविकता प्रदान करनेवाला तत्व
4.3.2 प्राचीन भारतीय स्वरुप
4.3.3 प्राचीन पाश्चात्य स्वरुप
4.3.4 न कोई सीमा, न मर्यादा
4.3.5 अनेक मंचीय तत्वों की सहायता से संभव
4.3.6 स्थल, काल, समय तथा संस्कृति दर्शक हो
4.4 देशकाल वातावरण के गुण
4.4.1 वर्णनात्मक सूक्ष्मता
4.4.2 विश्वसनीय कलात्मकता
4.4.3 उपकरणात्मक सन्तुलन
4.4.4 चित्रात्मकता
4.4.5 वास्तविकता
4.5 विवेच्य नाटकों में देशकाल और वातावरण
4.5.1 आंतरिक वातावरण
4.5.2 बाह्य वातावरण
4.6 निष्कर्ष
संदर्भ सूची

पृष्ठ क्रमांक

पंचम अध्याय - ''आलोच्य नाटकों में चित्रित भाषा-शिल्प का अनुशीलन'' **123-158**

5.1 भाषा का स्वरुप
5.2 शिल्प का अर्थ
5.3 शिल्प की परिभाषा
5.4 शिल्प का महत्त्व
5.5 शिल्प का स्वरुप
5.6 भाषा-शिल्प से तात्पर्य
5.7 नाटक में भाषा-शिल्प का महत्त्व
5.8 विवेच्य नाटकों में भाषा-शिल्प
5.8.1 विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग
5.8.1.1 संस्कृत शब्द
5.8.1.2 अरबी शब्द
5.8.1.3 फारसी शब्द
5.8.1.4 अंगरेजी शब्द
5.8.1.5 देशज
5.8.1.6 विदेशी शब्द
5.8.1.7 तुर्की शब्द
5.8.1.8 अनुकरण बोधात्मक शब्द
5.8.1.9 उर्दू शब्द
5.8.1.10 अन्य शब्द
5.8.1.11 ध्वन्यार्थक शब्द
5.8.1.12 द्विरुक्त शब्द
5.8.1.13 अपशब्द
5.8.2 भाषा सौंदर्य के साधन
5.8.2.1 अलंकारिक भाषा
5.8.3 मुहावरें से युक्त भाषा
5.8.4 वाक्य-विन्यास
5.8.4.1 अन्त में कर्तावाले शब्द
5.8.4.2 अनिश्चित क्रमवाले शब्द
5.8.4.3 पात्रों की परिस्थिति, मानसिक उद्वेलन के अनुसार

पृष्ठ क्रमांक

5.8.4.4 टूटे बिखरे तथा छोटे वाक्य
5.8.4.5 क्रियाहीन वाक्य
5.8.5 दार्शनिकता से युक्त भाषा
5.8.6 व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग
5.8.7 ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग
5.8.8 सीधी, सरल भाषा
5.8.9 प्रभावशाली भाषा का प्रयोग
5.9 शैली का स्वरुप
5.10 शैली के गुण
5.11 विवेच्य नाटकों में विविध शैलियों का प्रयोग
5.11.1 वर्णनात्मक शैली
5.11.2 विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक शैली
5.11.3 पत्रात्मक शैली
5.11.4 काव्यात्मक शैली
5.11.5 नाटकीय शैली
5.11.7 दिवास्वप्न शैली
5.11.8 पूर्व दिप्ती शैली
5.12 निष्कर्ष
संदर्भ सूची

षष्ठ अध्याय - "आलोच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ" **159-190**

6.1 प्रस्तावना
6.2 समस्या अर्थ
6.3 'सिन्दूर की होली' की समस्याएँ
6.3.1 पट्टीदारों के कलह की समस्या
6.3.2 कानून सुरक्षा की समस्या
6.3.3 चिरंतन नारी की समस्या
6.3.4 विवाह की समस्या
6.3.5 स्वच्छंद नारी की समस्या
6.3.6. अन्तर्व्दव्द और मानसिक संघर्ष की समस्या
6.3.7 रोग के उपचार की समस्या

पृष्ठ क्रमांक

6.3.8 बुध्दिवादी समस्या
6.3.9 यौन समस्या
6.3.10 रिश्वतखोरी की समस्या
6.4 'संन्यासी' नाटक की समस्याएँ ।
6.4.1 सेक्स एवं विवाह समस्या पर आश्रित समस्या
6.4.2 अनमेल विवाह की समस्या
6.4.3 चिरन्तन नारी की समस्या
6.4.4 बुध्दिवाद की समस्या
6.4.5 वर्तमान शिक्षा पध्दति समस्या
6.4.6 राजनीतिक समस्या
6.5 निष्कर्ष
संदर्भ सूची

सप्तम अध्याय - ''उपसंहार'' **191-194**

संदर्भ ग्रंथ सूची **195**